जल हमारे ~~लिए~~ ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है। जल किसी वस्तु, पदार्थ का नहीं, बल्कि 'परब्रह्म' का वाचक है। दुनिया की सभी सभ्यताएँ नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं। भारत की सभ्यता भी गंगा सहित अनेक नदियों के किनारे ही बसी। यही कारण है कि वैदिक वाङ्मय में जल के पूरे एक सौ पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया गया है। आधुनिक विज्ञान ~~भी~~ भी कहता है कि हमारे शरीर का तीन-चौथाई भाग 'जलमय' है। जल है तो हम हैं, ~~जल~~ जल नहीं तो हम भी नहीं। संसार का प्रत्येक जीवधारी, प्रत्येक प्राणी जल का तलबगार है। हरमू नदी भी रांची की लाइफलाइन है जिसे हमने अपने स्वार्थवश आज नाले से भी बदतर बना दिया है। हमें यह सोचने की जरूरत है कि हमारी जीवनदाता नदियाँ हमसे रूठकर दूर चली जाएँ तो हम अपने अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकते।

अथर्ववेद में कहा गया है कि "धरती हमें माँ के समान सुविधा एवं सुरक्षा देती है। अतः धरती मेरी माँ है और मैं उसका पुत्र हूँ"। जाहिर है धरा की परिकल्पना नदियों के बिना अधूरी है। झारखण्ड की राजधानी रांची में भी जीवन की अनुकूलता के लिए हरमू नदी का जीर्णोद्धार तथा संरक्षण जरूरी है। कहने की बात सिर्फ हरमू ही नहीं बल्कि राज्य की तमाम नदियों, तालाबों, बावड़ियों, पोखरों को बचाने की जरूरत है ताकि हमारे हलक न सूखें, पक्षियों, जानवरों, वन्य जीवों, हरे-भरे पेड़ों को पानी मिले। खेतों को पानी मिले, औद्योगिक इकाईयों को पानी मिले ताकि झारखण्ड का जन-जीवन खुशियों से लहलहाए।

आज जरूरत है कि नदियों के साथ हम अपने नैसर्गिक सम्बन्ध को महसूस करें। पानी भी बाजार का हिस्सा हो गया है। तालाब, कुएं, पोखर, नदियों की उपेक्षा का ही नतीजा है कि आज बोतलबन्द पानी हर जगह-हर मौके पर उपलब्ध है — पैसा फेंको; तमाशा देखो। देश को यह समझने की जरूरत है कि हमारी परंपरागत छोटी-छोटी जल-संरचनाएं ही हमें वह सब लौटा सकती हैं जिसे हमने खोया है। इसे नजरअंदाज करना खतरे को आमंत्रण है जिसका खामियाजा आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। इसी संदर्भ में रांची शहर को बचाने के उद्देश्य से हरमू नदी के जीर्णोद्धार और संरक्षण का बीड़ा हमने उठाया है।

रांची राजधानी के कई इलाकों में भूजल स्तर खतरनाक स्थिति में है। रांची की प्राणवाहिनी हरमू नदी वर्षाजल को भूगर्भीय जल में परिणत करने का माध्यम है जिसे कूड़े-कचरे और अतिक्रमण से हमने बदतर स्थिति में पहुंचा दिया है। हरमू नदी अपने दोनों ओर के पठारीय संरचना की सबसे निम्न भूमि है जिसके किनारों पर पठारी जल का प्रवाह होता रहा है। इसे पुनः जीवन्त करना हमारा नैतिक दायित्व बनता है। रांची का सौन्दर्य इसकी प्राकृतिक नैसर्गिकता एवं निरंतरता में है। रांची का प्राकृतिक गौरव वापस करने के लिए हरमू नदी का पानीदार होना जरूरी है।

हरमू नदी के एम्बीमेन्स (प्राकृतिक परिवेश) के विकास के साथ यह संदेश है कि प्राकृतिक संतुलन के उदाहरण के रूप में आना

आने वाली सूबा झारखण्ड जो धरा के जीवन हेतु ऑक्सीजन उत्पादक राज्य है, नदियों के संरक्षण का एक मिसाल बने। कहा जाता है कि दुनिया में तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए ही होगा। हमारा समाज पानी बचाने वाला समाज रहा है। अपने इलाके के मौसम, जलवायु चक्र, भूगर्भ, धरती-धन, पानी की मांग और आपूर्ति का गणित जानने वाले समाज की इस पीढ़ी को इसके लिए आगे आना होगा ताकि रांची का मौसम पहले की ही तरह खुशगवार रहे। हरमू के जीर्णोद्धार के लिए नगर विकास विभाग ने एम० ओ० यू० किया है। कोशिश शुरू हुई है पर सभी लोगों को इसके लिए आगे आना होगा।